

क्यों होती हो अधीर यूँ मिथिला महाराणी ।  
नहीं हम से सहा जाता तेरी आंखों का पानी ॥  
लखि सास का सनेह करुणा भीज के रघुवर  
कहने लगे विनीत हो जोड़ दोऊ कमल कर  
हो मात क्यों अधीर हो तुम बोलती बानी ॥  
सिर आंखों पै है मेरे आज्ञा जो तुम्हारी  
बसि नेह के सदा हूँ यह बान हमारी  
तेरी चरण छाया मैं ने कोटि अवध जीवन मानी ॥  
तेरा दुलार देखके मैं बहुत अघाया  
तेरा प्यार मेरे रोम रोम समाया  
क्या देऊं उत्तर जननी मेरी बुद्धि है हिरानी ॥  
अब उचित जानि जो कहो मैं सोई करूंगा  
मन क्रम वचन नेह टेक से न टरूंगा  
यह वचन मेरा मान्यो तुम सत्य सयानी ॥  
त्रिकाल में कभी न हो विछोह तुम्हारा  
तू मात है हमारी मैं तोर कुमारा

सदा छोह करती रहो निज बाल जीवन जानी ॥  
कौशल्या आदि जो हैं निज जननी हमारी  
उनसे भी अधिक मेरे हृदय श्रद्धा तुम्हारी  
तेरी कोमल कृपा दृष्टि में है सुधा समानी ॥  
जब भी करोगी स्मरण तब आऊंगा मैया  
तेरे प्रेम में बांधे रहें हम चारों ही भैया  
कभी भुलेगी न हम से जनकपुर सुख खानी ॥  
सुन प्रेम वचन राम के मातु प्रेम विभोरा  
मुख चंद्र लगी देखने करि नयन चकोरा  
कर गोद सियाराम को तन सुरति भुलानी ॥  
चिर जीओ लली लाल मेरे प्राण की थाती  
तेरे दरस परस मिलन से भई ठण्डी है छाती  
लिए गोद युगल मोद लहो कोकिल कल्याणी ॥